ओम् शान्ति 1-7-21 मधुबन

''दीदी मनमोहिनी जी की दिव्य स्मृति में - जुलाई मास के लिए होमवर्क''

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा पूर्वज आत्माओं की सूक्ष्म सकाश द्वारा स्व सेवा और विश्व सेवा में आगे बढ़ने वाले सर्व संगमयुगी सर्वश्रेष्ठ भाग्यवान आत्मायें निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - यह जुलाई मास हमारी मीठी दीदी मनमोहिनी जी का स्मृति मास है, जैसे जून मास में हम सभी ने अपनी मीठी मम्मा की विशेषतायें सुनी और उन्हें ध्यान पर रखते हुए पुरुषार्थ की रेस की। ऐसे अभी दीदी मनमोहिनी जी जो यज्ञ की आधार स्तम्भ थी, उनकी दूरदृष्टि, परखने की शक्ति, ईश्वरीय नियम मर्यादाओं में दृढ़ता के साथ पालन करने और कराने की शक्ति का सभी वर्णन करते हैं। आज दीदी मनमोहिनी जी की 28 मुख्य विशेषतायें और उनकी दिव्य शिक्षायें होमवर्क के रूप में भेज रहे हैं। इस पर भी सभी ब्रह्मा वत्स विशेष अटेन्शन देकर पुरुषार्थ की रेस करना जी।

वैसे तो आप सभी दीदी जी के जीवन परिचय से परिचित होंगे फिर भी नये भाई बहिनों को सम्मुख रखते हुए दीदी मनमोहिनी जी के विषय में कुछ बातें लिख रहे हैं।

दीदी जी का लौकिक नाम गोपी था, आप एक बहुत नामीग्रामी धनाड्य सिन्धी परिवार से थी। यज्ञ की स्थापना के समय अनेक बन्धनों को तोड़ते हुए अपनी लौकिक माँ क्वीन मदर और लौकिक बहन शीलइन्द्रा के साथ किसी की परवाह किये बिना झाटकू रूप से समर्पित हो गई। आपका बाबा से अटूट प्यार था, हर पल, हर बोल में बाबा बाबा ही निकलता। आप दिलवाला की सच्ची दिलरूबा थी। दीदी जी को अव्यक्त नाम मिला - ''**मनमोहिनी**'' दीदी के सानिध्य में जो भी आता, दीदी उसका मन ऐसा मोह लेती जो वह बाबा का बन जाता।

इस माउण्ट आबू के स्थान को चुनने की सेवा बाबा ने दीदी जी को ही दी। 1950 में पूरा यज्ञ दीदी जी के निर्देशन में कराची से आबू में ट्रांसफर हुआ। 1952 से जब भारत में ईश्वरीय सेवायें प्रारम्भ हुई, उस समय दीदी जी इलाहाबाद, दिल्ली आदि स्थानों पर अपने त्याग, तपस्या और निश्चय के बल पर कई सेवाकेन्द्र खोलने के निमित्त बनी और मातेश्वरी जगदम्बा माँ के अव्यक्त होने के पश्चात 1965 से आप फिर से बापदादा के साथ मधुबन में रहकर यज्ञ की इंटरनल कारोबार को, पूरे प्रशासन को सम्भालने में राइटहैण्ड बनीं। 1969 में ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के पश्चात दीदी और दादी की जोड़ी ने पूरे यज्ञ को सम्भाला और दोनों ने मिलकर मात-पिता के रूप में देश विदेश के सर्व ब्राह्मण परिवार की नि:स्वार्थ पालना की और पूरे विश्व में सेवाओं का खूब विस्तार किया। दीदी-दादी की जोड़ी को सभी कहते थे - शरीर दो हैं, आत्मा एक है। ऐसी एकता का प्रूफ देकर, अन्य सभी बड़ी दादियों को, भाईयों को साथ लेकर, एक दो की राय को सम्मान देते हुए यज्ञ को निर्विघ्न बनाकर आगे बढ़ाया।

दीदी जी 28 जुलाई 1983 को अपने भौतिक देह का त्याग कर अव्यक्त वतन वासी बनी। आज उनके पुण्य स्मृति दिवस पर उनकी अनेकानेक विशेषतायें नज़रों के सामने घूम रही हैं, उनकी कुछ विशेषतायें और मधुर शिक्षायें आपके पास भेज रहे हैं, इन सभी विशेषताओं का अनुसरण करके हम भी अपने पूर्वजों के समान बन बापदादा का नाम रोशन कर सकते हैं।

आप इन विशेषताओं को अपनी क्लासेज़ में सुनाकर दीदी जी के जीवन चरित्र से सबको अवगत कराना जी। दीदी जी के निमित्त हर वर्ष 28 जुलाई को मधुबन में विशेष भोग लगता है, आप सभी भी अपने सेवास्थानों पर दीदी जी के निमित्त भोग लगाना जी।

दीदी जी की मुख्य विशेषतायें

1- सम्पूर्ण समर्पित: दीदी जी एक ऊंचे धनाड्य परिवार की होते हुए भी धन-सम्पदा, कलियुगी लोक-लाज की परवाह किये बिना एक धक से सेकण्ड में नष्टोमोहा बन समर्पित हो गई।

2- सच्ची मस्तानी गोपिका: आपका बाबा से इतना अटूट स्नेह था, जो नज़रों में एक ही बाबा बसता। दीदी के दिल में एक बाबा के सिवाए कोई भी नहीं समाया। बाबा के प्यार में आप कभी डांस करती तो सेमी ट्रांस में जाकर लवलीन (मगन) हो जाती।

3- सच्ची पतिव्रता, सतीव्रता, पिताव्रता: सदा तुम्हीं संग खाऊं, तुम्हीं संग बैठूं, तुम्हीं से रास रचाऊं... ऐसी एकव्रता होकर, सदा एक के ही गुण गाते आज्ञाकारी, वफादार, आनेस्ट बनकर रही। कभी किसी वस्तु व्यक्ति की तरफ आकर्षित नहीं हुई।

4- नम्बरवन गाडली स्टूडेन्ट: आप लौकिक में स्कूल नहीं गई, लेकिन भगवान का नम्बरवन स्टूडेन्ट बनकर आप सबकी टीचर बन गई। आप क्लास में कभी भी बिना कापी पेन के नहीं गई। आपको बाबा के महावाक्यों से (मुरली से) अति प्यार था, बहुत ध्यान से सबसे आगे बैठकर मुरली सुनती और उनसे बहुत अच्छे गुह्य प्रश्न निकालती और सबको उससे रिफ्रेश करती।

5- भाषण नहीं किये, सबको भासना दी: आपने कभी बड़ी स्टेज पर जाकर प्रवचन नहीं दिये, लेकिन एक एक को जिगरी पालना देकर स्नेह की भासना दी। सभी का प्यार एक बाबा से जुड़ाया। हर एक को इतना नि:स्वार्थ प्यार दिया जो और किसी में उसकी बुद्धि न जाए।

6- परखने और निर्णय शक्ति में नम्बरवन: दीदी की बुद्धि इतनी स्वच्छ स्पष्ट थी, जो सामने कैसी भी आत्मा आये, उसे फौरन परख लेती और उसकी हर आवश्यकता को पूरा कर उन्हें बाबा का बना देती। दीदी के बात करने का टैक्ट ऐसा था, जो बड़े-बड़े वी.आई. पीज भी दीदी जी से मिलने के बाद रेग्युलर स्टूडेन्ट बन जाते।

7- दीदी की दृष्टि में रूहानी जादू: दीदी से जो भी दृष्टि लेते, उन्हें वैकुण्ठ की दुनिया का साक्षात्कार हो जाता। उनके योग की ऐसी स्थिति थी, आत्मिक स्थिति का ऐसा अभ्यास था, जो नज़र से निहाल कर हर आत्मा को तृप्त कर देती थी।

8- जितना गम्भीर, उतना रमणीक: दीदी इतनी अन्तर्मुखी रहती, जो उनके मुख से कभी व्यर्थ बोल नहीं निकलते। कभी किसी का परचिंतन, परदर्शन नहीं करती। उनके जीवन में गम्भीरता के साथ रमणीकता का बैलेन्स था। वे सभी से अलौकिक चिटचैट करके खूब रिफ्रेश कर देती। उनके साथ बहुत रमणीकता से खेलपाल भी करती।

9- शिक्षा देने की अलौकिक विधि: दीदी कभी सुनी सुनाई एक तरफ की बातों के आधार पर निर्णय नहीं लेती। अगर कोई किसी की कम्पलेन करता, तो उसी समय उनके सामने उसे भी बुलाकर फैंसला करती और जिसे जो शिक्षा देनी होती उसे स्पष्ट शब्दों में दे देती।

10- सखी स्नेह में नम्बरवन: दीदी सभी को सखी स्नेह देकर बाबा का बना देती। उनसे सखी स्नेह में ज्ञान की गहरी-गहरी रूहरिहान करती। दीदी कहती सहेली नहीं बनाना, सखी बनाना। सहेलियां आपस में परचिंतन करेंगी, सखियां ज्ञान की चिटचैट करेंगी।

11- सदा निर्भय, निडर और निश्चिंत: दीदी कभी किसी बात में भयभीत नहीं होती। बाबा की शक्तियों में उनका अटूट विश्वास था। निश्चय अटल था इसलिए सदा निर्भय रही। यज्ञ के सामने कैसी भी परिस्थितियां आई, उसमें सदा

निश्चिंत रही, कभी क्यों, क्या का प्रश्न नहीं किया, सदा प्रसन्नचित रही। कभी उनके चेहरे पर चिंता के चिन्ह दिखाई नहीं दिये।

12- सच्चाई सफाई की प्रतिमूर्ति: दीदी को सच्चाई अति प्रिय थी, अगर कोई अपनी गलतियां सच्चे दिल से महसूस कर लेता, तो उसे क्षमा कर देती और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती। आप अन्दर बाहर स्वच्छ साफ थी। आपकी कथनी और करनी सदा समान रही। जो दूसरों को कहती वह पहले खुद करके दिखाती।

13- बालक और मालिक का बैलेन्स: दीदी यज्ञ की मालिक थी, लेकिन उनके जीवन में बालक और मालिकपन का बैलेन्स देखा, जो यथार्थ बात होती वह मालिक बन सबके सामने रखती, लेकिन अगर सबकी एकमत नहीं होती तो बालक बन उसे भूल जाती। कभी बहस या डिबेट में समय नहीं गंवाती। दीदी बालक बन बाबा की अंगुली पकड़कर यज्ञ की हर डिपार्टमेंट का चक्कर लगाती। बाबा उन्हें कहते अभी आपने बाबा की अंगुली पकड़ी है, भविष्य में श्रीकृष्ण आपकी अंगुली पकड़कर चलेगा। ऐसा नशा है ना!

14- यज्ञ रक्षक, यज्ञ सेवाधारी: आपके रग-रग में यज्ञ के प्रति अटूट प्यार था, यज्ञ को किसी भी प्रकार की आंच न आये, उसके लिए आप बहुत ध्यान रखती और हर एक को यज्ञ की अमानत को सम्भालने की, नि:स्वार्थ सेवा करने की प्रेरणा देती।

15- सफल करने और कराने में नम्बरवन: दीदी ने अनेकों का तन-मन-धन सफल कराया। यज्ञ को कौन सम्भाल सकते हैं, दीदी उनकी जीवन कहानी को सुनकर, परखकर उसे समर्पित कराती और उनके दिल में यज्ञ के प्रति भावना भर देती।

16- लव और लॉ का बैलेन्स: दीदी अलौकिक माँ के रूप में सबको स्नेह भी देती, हर प्रकार से यज्ञ वत्सों को खाने पीने, पहनने, रहने की सुविधा देती, उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखती, लेकिन कभी कोई ईश्वरीय नियम एवं मर्यादाओं में अलबेला होता, आलस्य करता या किसी मर्यादा को तोड़ता तो उसे फौरन डायरेक्ट बुलाकर इशारा देती, सावधान करती।

17- मर्यादा पुरुषोत्तम स्थिति: दीदी स्वयं भी ईश्वरीय मर्यादाओं का कंगन बांधकर रखती और सभी का उस पर ध्यान खिंचवाती। ब्राह्मण सो देवता बनने वाली आत्माओं को विशेष संगदोष, अन्नदोष न लग जाए, दीदी पहली शिक्षा यही देती कि संग से अपनी सम्भाल करना। पवित्रता के व्रत को कभी खण्डित होने नहीं देना। ब्रह्मचर्य के साथ ब्रह्माचारी बनकर रहना।

18- आलराउन्ड, एक्यूरेट और अलर्ट: दीदी का ध्यान यज्ञ की आलराउण्ड सेवा पर रहता, वे मुरली क्लास के पश्चात स्वयं भण्डारे में चक्कर लगाती और कुछ समय सबके साथ बैठकर सब्जी काटने में मदद करती। एक्यूरेसी उनके जीवन में कूट कूटकर बाबा ने भरी थी। वे बाबा के अव्यक्त होने के बाद सभी पत्रों का जवाब खुद बैठकर लिखती या लिखवाती। कभी दीदी ने कोई भी सेवा पैन्डिग नहीं रखी। जो सेवा जब जरूरी है उसे उसी समय अलर्ट बनकर की और कराई।

19- स्वमानधारी और सम्मानदाता: स्वयं सर्वशक्तिवान बाबा हमारा साथी है, दीदी सदा इसी स्वमान में रहती और सबको दिल से सम्मान देती। अगर कोई अपनी सेवा समय प्रमाण सच्चाई से करता तो उसे इतना ही सम्मान देती, खातिरी करती, उन्हें विशेष सौगात देती। दीदी के दिल में यज्ञ के सच्चे सेवाधारियों प्रति अति रिस्पेक्ट था।

20- योगी और कर्मयोगी जीवन का आदर्श: दीदी स्वयं योग के गहरे अनुभवों में सदा रहती और अमृतवेले विशेष खुद सबको संगठित रूप में योग की ड्रिल कराती, साथ-साथ कर्म करते कैसे योग में रहना है, उस पर भी

ध्यान खिंचवाती। अव्यक्त रूप से यज्ञ की कारोबार निर्विघ्न रूप से चलाने के लिए दीदी बीच-बीच में विशेष मौन वा अव्यक्त भाषा द्वारा सबको साइलेन्स की शक्ति बढ़ाने की प्रेरणा देती।

21- बेहद की दृष्टि और बेहद का दृष्टिकोण: दीदी कभी तेरे मेरे की हदों में नहीं आई, यह ज़ोन अथवा यह एरिया इसकी है या उसकी है.. इस प्रकार की भाषा दीदी के मुख से कभी नहीं सुनी। वे सदा बेहद में रही, बेहद की सोच वा समझ से सबकी पालना की। मैं और मेरेपन की भाषा से मुक्त रही।

22- निमित्त और निर्मान: दीदी यज्ञ की अनेक जवाबदारियों को सम्भालते हुए सदा करावनहार बाबा है, वही करता कराता है, इसी निश्चय से स्वयं को निमित्त बनाए सदा निर्मान होकर रही। दीदी के बोल में कभी अभिमान का अंश नहीं दिखाई दिया।

23- फ्राकदिल के साथ एकानामी का अवतार: दीदी आने वाले मेहमानों की भरपूर खातिरी करती, कभी-कभी ऐसे सुहेज रचाती जिसमें 36 वा 56 प्रकार के व्यंजनों का ब्रह्माभोजन करवाती, एक बार तो दीदी ने 108 प्रकार का भोग बनवाया और सभी के साथ मिलकर खाया और खिलाया लेकिन साथ-साथ अनासक्त वृत्तियों पर भी ध्यान खिंचवाया। दीदी यज्ञ की एकॉनामी का बहुत ध्यान रखती, दीदी कहती गरीब-गरीब बच्चे, भोली-भोली मातायें अपनी मेहनत की कमाई यज्ञ में भेजती हैं, इसलिए कोई भी व्यर्थ खर्च नहीं करना है। अपने प्रति कम से कम खर्च हो, इस बात पर ध्यान रखना है। साधन सुविधायें सब सेवा के लिए हैं, अपने प्रति नहीं।

24- अपकारी पर भी उपकार की भावना: कभी कोई यज्ञ की वा बड़ों की इनसल्ट करता, कोई उल्टा सुल्टा बोलता तो भी दीदी कहती, बाबा ने सब पर उपकार किया है, इसका दोष नहीं है इसलिए कभी भी बदला लेने का ख्याल नहीं रखना। दूसरे को बदलने के बजाए खुद को बदल लो, इसमें ही भलाई है। दीदी ऐसे अपकारियों पर उपकार की भावना रखती थी।

25- सदा शुभ भावना, शुभ कामना सम्पन्न संकल्प:- दीदी ने स्वयं प्रति सर्व कामनायें समाप्त कर सभी के लिए शुभ कामनायें रखी। हर एक के प्रति दीदी की सदा यही शुभ भावना रहती कि यह केवल ब्रहमाकुमार-कुमारी नहीं लेकिन सच्चा तपस्वीकुमार, तपस्वी कुमारी बनें। तपस्या के बल से अपने पुराने संस्कारों को परिवर्तन करे। दीदी जी कहती अगर कोई स्वयं को सचमुच बदलना चाहते हैं तो वे अपने आपको खुद ही पढ़ायें। अपना टीचर आपेही बनें।

26- दिलवाला को अपने दिल में बसाने वाली सच्ची दिलरूबा दीदी के दिल में सदा एक दिलवाला ही रहा। कोई कितना भी स्नेही सहयोगी हो, दीदी कभी किसी पर प्रभावित नहीं हुई। हर एक का सम्बन्ध एक बाबा से जुड़ाया। खुद त्याग तपस्या और सेवा की मूर्ति बनकर रही। आपने देह अभिमान का त्याग किया। एक बाबा दूसरा न कोई यह दृढ़ता भरी तपस्या की। सेवा तो उनके रग-रग मे समाई हुई थी। हर एक को आलराउण्ड सेवाधारी बनने की प्रेरणा दी। जैसे वाणी की सेवा में हर एक इन्ट्रेस्ट रखता, ऐसे दीदी कहती कर्मणा सेवा में भी नम्बरवन लो। कोई भी सबजेक्ट में मार्क्स कम नहीं होनी चाहिए।

27- हर कारण का निवारण करने वाली सर्व की ईष्ट और अष्ट: दीदी की बुद्धि इतनी तीक्ष्ण और दूरादेशी थी जो सेकण्ड में हर कारण का निवारण कर देती इसलिए वह अनेकों के लिए ईष्ट बन गई। ऐसी ईष्ट और अष्ट में आने वाली आत्मा को कभी कोई कष्ट नहीं हो सकता। भले शरीर के हिसाब-किताब आये लेकिन उन्हें दु:ख की महूसता नहीं हुई। यज्ञ के सामने बातें तो और भी अनेक आई लेकिन दीदी ने उन बातों को नहीं देखा। कोई भी बात आई तो कहती थी कि शायद बाबा को इस बात से मुझे और कुछ सिखाना है, अनुभवी बनाना है। दीदी ने बाबा के साथ अपने सर्व सम्बन्ध जोड़े हुए थे। दीदी कहती बाबा को सखा और साज़न बनाकर उनसे ही दिल की लेन-देन

करो। टीचर को अपना फ्रैन्ड बना लो तो उनकी शिक्षायें सहज ही जीवन में आ जायेंगी। तुम्हीं से खेलू, तुम्हीं से खांऊ.. इसी संस्कार ने दीदी को बाप समान बना दिया।

28- उपराम और साक्षी दृष्टा: दीदी अव्यक्त होने के कुछ महीने पहले से ही हर कारोबार से उपराम होती गई। कभी कोई बात दीदी को सुनाते तो दीदी कहती, छोड़ो इन बातों को अब तो घर चलना है। दीदी के इस वाक्य के आधार पर ही एक गीत बना - अब घर चलना है...। इसी एक स्मृति से दीदी साक्षी दृष्टा बनती गई, हर कार्य व्यवहार से भी उपराम होते, 28 जुलाई 1983 में इस भौतिक देह से अलग हो अव्यक्त वतनवासी बन बेहद सेवा में चली गई।

दीदी मनमोहिनी जी द्वारा प्राप्त मधुर शिक्षायें

1- बाबा की श्रीमत हम बच्चों को सम्पन्न बनाने के लिए है। श्रीमत पर चलने का आधार है - एक बल एक भरोसा। यह श्रीमत की नींव है। बाबा के हर इशारे को हम एक्ट में तभी ला सकेंगे जब पूरा फेथ होगा। जिसमें फेथ होता है, उसकी राय में कभी अपनी राय मिक्स नहीं हो सकती। एक बाबा की राय पर चलने से हल्के रहेंगे। बाबा ने कहा है जिम्मेवारी बाबा को दे दो और खुद हल्को रहो। अगर किसी के मन में यह संकल्प चलता है कि बाबा तो अब साकार में नहीं हैं तो यह भी संशय है। अमृतवेले विधिपूर्वक योग में बैठते हैं तो अनुभव करते हैं कि बाबा लेन-देन कर रहे हैं। स्व-स्मृति में रहेंगे तो बाबा को जो अपना कार्य कराना है, कराते रहेंगे। कराते हैं, ऐसा अनुभव करेंगे।

2- जैसे श्वांस के बाद श्वांस उठता है, वैसे संकल्प के बाद संकल्प उठता है, दोनों की रेस है। कर्म में श्वांस जल्दी चलते, योग में संकल्प जल्दी चलते। योग में एक बाप की याद के प्यार के संकल्प में एकाग्र हो जाएं तो सब रस प्राप्त होते हैं। एकाग्रवृत्ति की धरनी पर हर संकल्प फलदायक होता है, इसके लिए कर्मयोग का अभ्यास चाहिए। दिनचर्या पर अटेन्शन हो। न्यारे और प्यारे की स्थिति बहुत मीठी अवस्था है।

3- ज्ञान सागर बाप के हम सब बच्चे सदा ज्ञान की लहरों में लहराते हैं, लहरें तो भिन्न-भिन्न प्रकार की होती हैं लेकिन सागर तो अति गम्भीर है, योग में बैठते ही महसूस होता कि लाइट माइट जैसे खैंच रही है। नीचे आने की दिल नहीं होती।

4- हर बात में पहले अपना दोष निकालना है तब परिवर्तन और उन्नति सम्भव है। हमारे पुरुषार्थ की पहली सीढ़ी है देह सहित देह के सम्बन्धों से उपराम। लेकिन अभी तक इस सीढ़ी पर कई तो चढ़े ही नहीं हैं इसके लिए याद रहे कि प्रीति एक बाप से और दुनिया से केवल रीति निभानी है।

5- सदा अपने स्वमान में स्थित रहो तो फरिश्ते पन की स्टेज दूर नहीं। कभी-कभी अगर कमजोरी के संकल्प उठते हैं तो कहेंगे स्वमान की स्टेज से नीचे आ गये। महारथी की मुख्य निशानी है फालो फादर और हर कदम श्रीमत पर। तो जो स्वरूप बाबा हमारे से चाहते हैं वह अभी प्रत्यक्ष होना चाहिए। सदैव याद रहे जैसा कर्म हम करेंगे... हमें बाबा के दिल तख्तनशीन बनना है। अगर दिल कहाँ टुकड़ा-टुकड़ा होगी तो बाबा स्वीकार नहीं करेंगे।

6- बाबा की दिल और मेरी दिल में अन्तर न हो। कोई कितना भी गुणवान हो, हमें उस पर न्योछावर नहीं जाना है। देखना है इसको ऐसा गुणवान बनाया किसने? तो बुद्धि डायरेक्ट उस तरफ (बाप की तरफ) चली जायेगी। जब बाबा की दिल से दिल मिल गई तो और कहाँ जा नहीं सकती। इसमें यह गुण है इसके लिए इससे हमारा स्नेह है, यह भी बहुत सूक्ष्म माया है। बाबा हमें अभी इससे भी पार लिये जा रहे हैं। जब दिलवर को दिल दे दी तो हमारा फरिश्ता स्वरूप दूर नहीं। ईश्वरीय परिवार में भी बुद्धि नहीं फंसानी है। हमारा संसार, हमारा परिवार एक ही है - हमारा तो एक बाप दूसरा न कोई। यह भी महारथियों की निशानी है, इससे ही किला मजबूत होगा।

7- जो हम सबको पहले दिन सुनाते हैं कि तुम्हें चार नियमों का पालन करना है - 1- ब्रह्मचर्य 2- सतसंग 3-शुद्ध अन्न और 4- दैवीगुण। तो हम अपने में चेक करें कि कहाँ तक इन नियमों का पूर्ण रूप से पालन करते हैं? कर्मणा में तो नहीं आते लेकिन मन्सा में भी संकल्प न आये। सदैव संगदोष से बचे रहें। सदैव एक बात याद रहे कि एक की सुननी है, एक को ही दिल में बसाना है।

8- जब हम बापदादा को पूरा-पूरा फालो करेंगे तब हमारी सूरत से बाप की सीरत दिखाई देगी। हमेशा ध्यान रहे कि चढ़ती कला वाले का संग करना है।

9- योग द्वारा हमारे विकर्म विनाश होते हैं उसकी निशानी क्या है?

1- उसकी नेचर ही बदल जायेगी। 2- बुद्धि की लाइन क्लीयर हो जायेगी। 3- बोझ से हल्के रहेंगे। उनके मुख से कभी यह नहीं निकलेगा कि मेरे आगे यह कोई परीक्षा आई है। 4- चढ़ती कला होगी, जिससे उसे फीलिंग आयेगी कि ये मेरे विकर्म विनाश होते हैं। 5- मेहनत कम सफलता ज्यादा का अनुभव होगा।

10- ''अब घर चलना है'' यह याद रहे तो आटोमेटिक सब तरफ से दिल हल्की हो जाती है, कोई परवाह नहीं। खाते-पीते-उठते ...घर चलना है। इससे बाप याद रहेगा, पुरानी दुनिया से किनारा हो जायेगा। फिर तेरा, मेरा, इसने किया, उसने किया... यह शब्द भी मुख से नहीं निकलेंगे। यह भी महारथी की निशानी है।

11- अगर कोई कहे तुम्हारे में यह कमजोरी है तो उसे फौरन मानना चाहिए। बैठकर जिद करना, सिद्ध करना, यह हमारे ब्राह्मण परिवार का नियम नहीं है।

12- कभी किसी पर प्रभावित नहीं होना, बाबा ही मेरा संसार है, एक बाबा दूसरा न कोई। जरा भी किसी देहधारी में रग नहीं जानी चाहिए। अगर कोई सेवा में सहयोगी है, धन से सहयोग करता है, तो वह अपना भाग्य बनाता है, हमें उसके पीछे लट्टू नहीं होना है। मुझे किसी से कुछ नहीं चाहिए, एक बाबा से ही सबकुछ लेना है। लेन-देन से बहुत गहरा हिसाब बनता है इसलिए किसी से पर्सनल कुछ भी नहीं लेना है, सबका सम्बन्ध एक से जुड़ाना है, मेरे से किसी का संबंध न जुट जाए, यह बहुत ध्यान रखना।

13- सबसे बड़ी बीमारी है नाम-रूप की, फैमिलियरिटी बहुत-बहुत नुकसान करती है इसलिए कभी किसी देहधारी से दिल नहीं लगाना। एक बाबा के सिवाए और कोई बुद्धि को अपनी तरफ न खींचे। बाबा ही हमारा संसार है, तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं संग रास रचाऊं, तुम्हीं को दिल का हाल सुनाऊं... सब सम्बन्धों का सुख एक बाबा से लेना है। मेरा तो एक दूसरा न कोई... यह पाठ पक्का करना है।

14- हमारी कथनी, करनी और रहनी समान होनी चाहिए। कहें एक, करें दूसरा.. अब यह शोभता नहीं। कभी किसी का घर नहीं फिटाना है, आपस में प्यार प्रेम से रहना है। कभी घर में झगड़ा न हो, यह ध्यान रखना है। एक ने कहा दूसरे ने माना, उसको कहेंगे ब्रह्मा ज्ञानी। कभी भी मतभेद में नहीं आना। तू मैं, तेरा मेरा यह रावण कराता है, हम तो रावण सम्प्रदाय से अभी राम सम्प्रदाय में आ गये इसलिए रावण का अंश भी हमारे में नहीं होना चाहिए।

15- ईश्वरीय मर्यादायें हमारे जीवन का श्रृंगार हैं, कभी कोई मर्यादा का संकल्प से भी उल्लंघन नहीं करना है। मर्यादायें हमारी रक्षा करती हैं इसलिए इसमें कभी बेपरवाह नहीं बनना। जो मर्यादा की परवाह करते हैं, बाबा उनकी परवाह रखता है।

16- बाबा ने कहा और हमने किया, इससे बाबा खुश होगा। बाबा खुश तो जहान खुश। बीज को अपना बना लिया तो सारा झाड ही अपना हो जायेगा। अच्छा। सभी को बहुत-बहुत याद... ओम् शान्ति।